Indian Streams Research Journal ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-7, August-2013

वैश्विक स्तर पर हिन्दी का भविष्य

सुनीता बामल
हिन्दी प्राध्यापिका सनातन धर्म महिला महाविद्यालय, हांसी।

सारांश: हिन्दी साहित्य में 1000 ई. के आस पास हिन्दी भाषा का प्रारम्भ माना जाता है। तब से लेकर अब तक हिन्दी भाषा कभी अवधी के रूप में साहित्य विद्या रचने में सफल हुई, तो कभी ब्रज भाषा के रूप में। वर्तमान में हिन्दी का खड़ी बोली रूप अपने चरमोत्कर्ष पर है।

हिन्दी हमारी राज भाषा है। 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा में मत पारित हुआ कि – हिन्दी हमारी राजभाषा होगी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा। साथ ही यह प्रावधान भी दिया गया कि संविधान के प्रारम्भ के 15 वर्षों तक केन्द्र सरकार अंग्रेजी भाषा में भी अपना कामकाज कर सकती है। लेकिन 15 वर्ष समाप्त होने के पश्चात् राजनीतिक दबाब के कारण इस अवधि को बढ़ा दिया गया जिसके परिणामस्वरूप अंग्रेजी भाषा हिन्दी के समक्ष एक चुनौती का रूप धारण कर चुकी है।

प्रस्तावना :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण अनेक लोगों से सम्पर्क स्थापित करता है। विभिन्न लोगों के द्वारा उच्चरित् होने के कारण भाषा विभिन्न सोपानों को पार करती है और निरन्तर विकास के मार्ग पर अग्रसर रहती है। आज हिन्दी भाषा वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान दर्ज करवा चुकी है। वर्तमान में हिन्दी भाषा केवल सामान्य भावाभिव्यक्ति का साधन नहीं हैं, केवल साहित्य की भाषा नहीं है अपितु साहित्येतरता (साहित्य से परे) भी उसका विकास हुआ है। आज ज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी की अपार सम्भवानाएं है।

हिन्दी भाषा में अपार शक्ति है। स्वतन्त्रता की लड़ाई हमने हिन्दी के माध्यम से लड़ी थी। निस्सन्देह हिन्दी भाषा हमारे देश के संस्कार, शील और चरित्र की परिचायक है। वह जो कहती है, वह उसकी उर्जा है। वह जो सहन करती है, वह उसका शील है। उसमें न केवल मनुष्य बोलता है बल्कि मानव के राग–विराग, मर्म–कर्म, संस्कार–विचार, सर्जन और विसर्जन सब कुछ बोलते है।

आज सब हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में देखने के लिए लालायित हैं और इसमें कोई बुराई भी नहीं है क्योंकि दुनिया की किसी भी भाषा ने मात्र एक शताब्दी में इतना उत्कृष्ट साहित्य नहीं रचा जितना हिन्दी ने रचा है। यदि शैक्सपीयर से लेकर आज तक अंग्रेजी भाषा को अपना साहित्य समय रचने में पांच सौ वर्ष लगे, तो हिन्दी ने खड़ी बोली के रूप में अपने उदय से आज तक केवल सौ वर्ष में वह रच दिया जिसके लिए कोई भाषा हिन्दी की सृजनात्मकता से ईर्ष्या कर सकती हैं यही कारण है कि आज हिन्दी में वैश्विक स्तर पर अपार सम्भावनाएं हैं।

आज हिन्दी विश्व बाजार के रूप भूमण्डल में खड़ी है और अमेरिका जैसा समर्थ देश अपना बाजार खोजने के लिए, हिन्दी भाषा सीखने के लिए साढ़े बाईस हजार करोड़ रूपये खर्च करने को तैयार है। विश्व के सौ से अधिक विश्वविद्यालय हिन्दी में अध्यापन और शोध कर रहे हैं। हिन्दी ने विश्व शक्तियों को भले ही बाजार के रास्ते से आकर्षित किया है, मगर उनको यह बता दिया है कि अब वह केवल 60–70 करोड़ हिन्दी भाषियों की भाषा न होकर पूरे देश की भाषा है। यह कहना समीचीन होगा कि हिन्दी पूरी दुनिया के दरवाजे पर दस्तक दे चुकी है।

यह सर्वविदित है कि बीसवीं शताब्दी के छठे दशक से हिन्दी में प्रयोजनमूलक हिन्दी और कामकाजी हिन्दी का प्रादुर्भाव हुआ है जिसके कारण कार्यालयों में ज्ञापन, अधिसूचना, टिप्पण, प्रारूप, आवेदन आदि कार्य हिन्दी में संभव हो पाये हैं। आज बैंक शाखाओं, कम्पनियों और कार्यालयों में बेची जाने वाली वस्तुओं के विज्ञापन से सम्बंधित जो सूचनाएं भेजी जाती हैं, वह हिन्दी में होती है विदेशी कम्पनियां भी इस तथ्य को स्वीकार कर रही हैं कि भारत में उत्पादों के प्रचार हेतु हिन्दी ही उपयोगी माध्यम है। कोका–कोला के प्रचार में ठंडा मतलब कोका–कोला अपनाया गया है। इस प्रकार व्यवसायिक और औद्योगिक संदर्भों के विकास और राष्ट्रीय गरिमा हेतु हिन्दी का प्रयोग हिन्दी के स्वर्णिम भविष्य की ओर संकेत करता है।

स्ंचार माध्यमों से हमारा विश्व एक गांव की तरह हो गया है। समाचार पत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन और इंटरनेट से घर बैठे देश–विदेश के समाचार प्राप्त करना सुलभ हो गया है। हिन्दी समाचार–पत्रों की तेजी से बढ़ती हुई संख्या, आकाशवाणी और दूरदर्शन पर लोकप्रिय होते हिन्दी कार्यक्रमों और इंटरनेट पर हिन्दी में ई–मेल के उपयोग से हिन्दी का वैश्विक भविष्य स्वतः सिद्ध होता है।

आज के वैज्ञानिक युग में विभिन्न देशों की समस्याएं सांझी हो गई है। देशों के एक–दूसरे के साथ व्यापारिक समझौते हो रहे है। एक–दूसरे का आर्थिक सहयोग लिया जा रहा है। इससे हिन्दी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा मिल रहा है और विश्वव्यापी स्तर पर हिन्दी की जड़े मजबूत हो रही हैं।

संस्कृति किसी भी राष्ट्र का सबसे मजबूत स्तम्भ है। संस्कृति रूपी स्तम्भ राष्ट्र को स्थायित्व प्रदान करता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि हमारी संस्कृति को हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी ने मजबूत बनाया है। क्योंकि हिन्दी भाषा भावनाओं और संवेदनाओं को जगाती है। हिन्दी भाषा का 'मां' शब्द अपने आप में दुनिया को समेटे हुए है जो एक शिशु द्वारा सर्वप्रथम उच्चरित किया जाता है। हिन्दी भाषा ही एक शिशु को संस्कारी पुरूष बनाती है। भारत की संस्कारी छवि पाश्चात्य देशों को भी प्रभावित कर रही है। यही कारण है कि अनेक बार विदेशी जोड़े भारत में आकर अपना विवाह रचाते हैं और यह सब हिन्दी भाषा के लिए वैश्विक स्तर पर द्वार खोल रहा है।

आज भारत के सभी मंत्रालयों, न्यायालयों, संसद, राष्ट्रपति भवन तथा निजी सरकारी उद्यमों में हिन्दी अनुवाद कार्य सम्पन्न किए जाते है। संसद में किसी भी भाषा में दिए जाने वाले वक्तव्य का हिन्दी भाषांतरण किए जाने की युगपत् व्यवस्था है। विदेशी फिल्मों की हिन्दी डब्बिंग और विभिन्न सूचनात्मक, ज्ञानबर्धक टी.वी. चैनैल्स के अंग्रेजी से रूपांतरित हिन्दी प्रसारण हिन्दी भाषा की शक्ति का उसकी क्षमता का परिचय प्रदान करते हैं।

दो देशों ने अभी हाल में हिन्दी शिक्षण तथा प्रयोग की जिस प्रक्रिया का प्रारम्भ किया वह हिन्दी की जनप्रियता है। हिन्दी भाषा के ज्ञान को अब सामयिक आवश्यकता के रूप में देखा जा रहा है। एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में हिन्दी के विकास को देखते हुए टेक्सास प्रान्त में स्कूलों ने अपने हाई स्कूल के छात्रों के लिए हिन्दी की पाठ्य पुस्तक प्रस्तुत की है। इसका नाम है – 'नमस्ते जी', 486 पृष्ठों से सलंग्न यह पुस्तक भारतीय मूल के शिक्षक श्री अरूण प्रकाश ने करीब आठ सालों की मेहनत से तैयार की है। टेक्सास प्रान्त हिन्दी की लोकप्रियता के मामले में सबसे आगे है। इजराईल के सम्बंध भारत से पहले भी काफी मजबूत हैं लेकिन अब इजराईल भारतीयों के साथ और गहरा सम्बंध जोड़ना चाहता है। इसके लिए इजराईल ने पहली बार हिन्दी और उर्दू भाषाओं की वेबसाइट लांच की है और दोनों भाषाओं में पत्रिकाएं भी निकाली है।

हिन्दी की विदेशों में लोकप्रियता को देखते हुए सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से हिन्दी का प्रचार जरूरी है।

हिन्दी के व्यापक प्रचार–प्रसार को देखकर ऐसा अनुभव होता है कि संभवतः हिन्दी भविष्य में वैश्विक स्तर पर अपना परचम लहराएगी। परन्तु ऐसा करना बाएं हाथ का खेल नहीं होगा। उस शिखर तक पहुचने के लिए उसे अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा और सबसे बड़ी चुनौती है अंग्रेजी भाषा। आज शिक्षा ने भी उधोग का रूप ले लिया है। गांव व शहर, गली व मुहल्लों में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल कुकुरमुत्ते की भांति फैलते जा रहे हैं। कैरियर में अंग्रेजी के सब्जबाग दिखाकर बच्चों को सरकारी स्कूलों की बजाय इन स्कूलों में दाखिला लेने के लिए प्रेरित और आकर्षित किया जाता है। कैरियर की मृगतृष्णा छात्रों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की तरफ भटका रही है। ज्ञान आयोग के अध्यक्ष श्री सेम पित्रोदा जी द्वारा अंग्रेजी को पहली कक्षा से अनिवार्य बनाने की सिफारिश हिन्दी भाषा के लिए बहुत बड़ा झटका है लेकिन आश्चर्य की बात है कि देश के प्रबुद्ध शिक्षा शास्त्रियों और भाषा विशेषज्ञों ने इसके विरूद्ध आवाज नहीं उठाई।

मीडिया भी हिन्दी भाषा के समक्ष चुनौती बनकर बनकर उभर रहा है।

ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-7, August-2013

आज हिन्दी की थाली में स्वाद बढ़ाने के लिए अंग्रेजी मसालों से युक्त व्यंजन परोसे जा रहे हैं। वर्तमान में हिन्दी समाचार–पत्रों में अंग्रेजी के शब्दों का धड़ल्ले से प्रयोग किया जा रहा है जिससे समचार पत्रों की बिक्री तो बढ़ रही है। परन्तु इससे हिन्दी भाषा की गरिमा को ठेस पहुंच सकती है। इलैक्ट्रोनिक मीडिया की तो बात ही क्या है? वह तो चटपटी खबरें परोसने में अपनी हदें पार चुका है। आज हिन्दी रूपी द्रोपदी मीडिया रूपी दुर्योधन के चुंगुल में फंस गई है लेकिन इस बार उसे अपनी आन की रक्षा स्वयं करनी होगी।

सभ्यता के कितने ही पड़ावों से गुजरता है जीवन और कितने पड़ावों से गुजरता है साहित्य और उसकी भाषा। कहते हैं कि इतिहास स्वयं को दोहराता है। कारण स्पष्ट है कि हम अतीत से सबक नहीं लेते। बाजारवादी चकाचौंध में हिन्दी की सम्भावनाओं को तलाश करने के उत्साह में कहीं भारत धीरे–धीरे 'इंडिया' बनकर ही न रह जाए और हिन्दी अपनी मौलिक पहचान ही न खो दे। इसलिए हमें इस चुनौती से भी निपटना होगा।

जहां तक अनुवाद का प्रश्न है तो वहां भी अनेक रूकावटें है। मैकमिलन् पेंग्विन और हार्पर कालिंस जैसे प्रकाशक हिन्दी के बढ़ते बाजार को देखकर हिन्दी में आए लेकिन हिन्दी लेखकों के साथ इनके व्यावसायिक रिश्ते खराब है, जिसे लेकर लेखकों के अन्दर असंतोष है। इसी कारण मैकमिलन बन्द हो गया। विदेशी प्रकाशक हकीकत में हिन्दी जमीन को नहीं पकड़ पा रहे हैं। यह भी वैश्विक स्तर पर हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य में बहुत बड़ी बाधा है।

पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण युवावर्ग के सोचने के स्तर में परिवर्तन आ गया है। हमारी आत्मा उस समय चीत्कार कर उठती है जब आज के नौजवान गाली के रूप में हिन्दी का प्रयोग करते हैं और कहते हैं कि 'फलां व्यक्ति ने तो आज मेरी हिन्दी कर दी' उन्हें हिन्दी की महिमा से अवगत करवाकर उनकी सोच में सकारात्मक परिवर्तन लाना अति आवश्यक है।

मनुष्य एक सर्जनशील प्राणी है। वह इतिहास के हाथ का खिलौना नहीं है। यदि एक तरफ वह इतिहास से प्रभावित होता है, तो दूसरी तरफ इतिहास का निर्माण करता है। इतिहास की नयी व्याख्या करता है और इतिहास की दिशाओं में परिवर्तन लाता है। यही कारण है कि तमाम चुनौतियों के बावजूद आज हिन्दी विश्व को नये आयाम प्रदान कर रही है। आज हिन्दी केवल साहित्य रचना का माध्यम ही नहीं है वरन् बाजार, विपणन एवं वाणिज्य, मीडिया, जन संचार, विज्ञापन फिल्म, शोध और अनुसंधान एवं प्रबन्धक आदि क्षेत्रों में भी अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। वैश्विक बाजारवाद में हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता आज हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करती है।

मेरी दृष्टि में अंग्रेजी की झूठी शान–शौकत अधिक टिकने वाली नहीं। पिछले दिनों कानपुर जैसे विशुद्ध हिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्र में मराठी भाषी महामहिम श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने अपना उद्‌बोधन हिन्दी में दिया। आज दर्जनों देशों के कमाऊ व्यापारियों की दृष्टि में हिन्दी है। ये सारे तथ्य हिन्दी के वैश्विक स्तर पर स्वर्णिम भविष्य की ओर संकेत कर रहे हैं। अब हमें मिलकर हिन्दी के मार्ग में आने वाली चुनौतियों का सामना करना होगा। समाज के दृष्टिकोण में सुधार लाकर हिन्दी को विश्वव्यापी बनाना होगा सुधार सदैव घर से प्रारम्भ होता है। इसलिए मेरा यह मानना है कि यदि हम अपने परिवार के सदस्यों का दृष्टिकोण हिन्दी के प्रति सुधार लेंगे तो समाज अपने आप सुधर जाएगा और वह दिन दूर नहीं जब हम हिन्दी को विश्वव्यापी स्तर पर अपनी पताका फहराते हुए देखकर गौरवान्वित होंगे।